बिरसा मुंड़ा

श्यामसिंह शशि

आज हमारा देश स्वाधीन है । इस स्वाधीनता के लिए देश के लोगों ने न जाने कितने कष्ट सहे । कुछ फाँसी के फंदे पर लटके तो कुछ जेल की यातनाएँ सहते रहे । कुछ लोगों को काले पानी की सजा हुई तो कुछ को मांडले जेल भेज दिया गया ।

हमारी आज़ादी की यह लड़ाई बहुत लंबी चली । इसके लिए हमारे कितने ही नेताओं, स्वाधीनता सेनानियों और कितने ही क्रांतिकारियों ने अपनी कुर्बानी दी । इस आजादी की लड़ाई में लड़नेवालों के कुछ नाम हमारी जबान पर हैं । लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह आदि के नाम तो सभी जानते हैं । बहुत से ऐसे देशभक्त भी हुए हैं जिन्होंने आजादी के लिए प्राण न्योछावर किए,पर उनका नाम बहुत ही कम लोग जानते हैं । ऐसे ही एक स्वतंत्रता सेनानी थे, बिरसा मुंड़ा ।

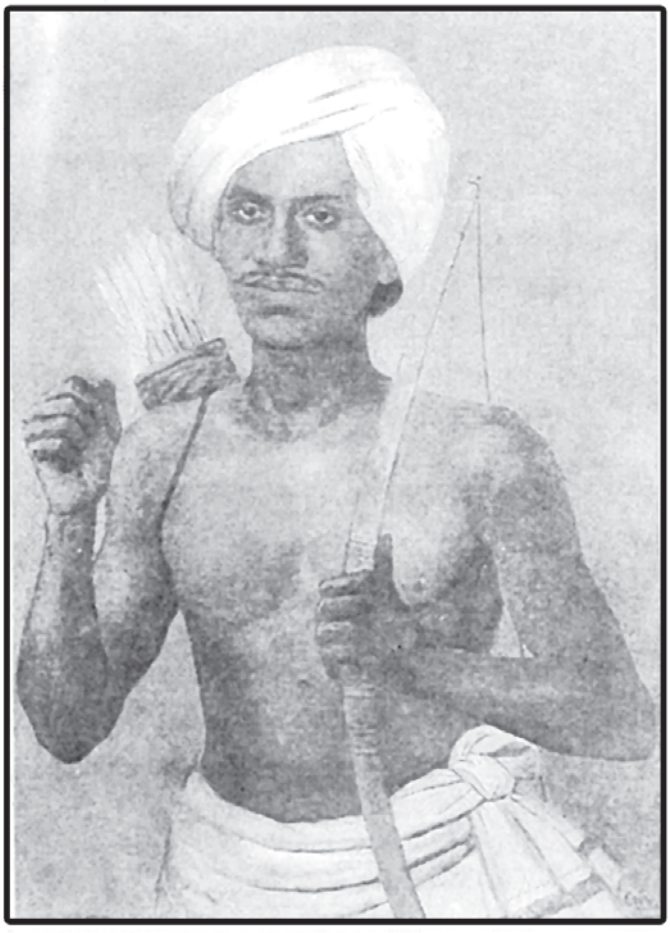

'मुंड़ा' एक जनजाति है । झारखंड़, मध्य प्रदेश और ओड़िशा राज्यों को मिलाने वाले सीमावर्ती क्षेत्र में ही अधिकांश मुंड़ा लोग बसे हुए हैं । इन जनजातियों की भाषाओं का समूह भी मुंड़ा कहलाता है । मुंड़ा लोग प्राय: छोटी-छोटी बस्तियों में रहते हैं और इनके घर मिट्टी तथा बाँस के बने होते हैं । इनकी वेश-भूषा बड़ी सादी होती है । युवक कमर पर एक कपड़ा लपेटते हैं । आजकल शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ इनकी वेश-भूषा में भी परिवर्तन आने लगा है । मुंड़ा समाज एक पितृ-प्रधान समाज है । ये लोग नाचने और गाने के भी शौकीन होते हैं ।

ऐसे सरल और मेहनती समाज में बिरसा मुंड़ा का जन्म सन १८७५ में अगस्त माह में हुआ था । बिरसा के दादा का नाम लकारी था । उनके पिता का नाम सुगाता था । ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म झारखंड़ प्रदेश के एक आदिवासी गाँव चालकाद में हुआ था ।

बिरसा का बचपन अन्य साधारण बालकों की भाँति बीता । वे माता-पिता के काम में हाथ बँटाते थे । कुछ समय बाद बिरसा को पढ़ने के लिए मामा के गाँव भेज दिया गया । बिरसा यहाँ दो वर्षों तक रहे । कुछ समय बाद उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया । धीरे-धीरे बालक बिरसा जवान हुए । वे बड़े बुद्धिमान और तेज-तर्रार स्वभाव के थे । उनका डील-डौल सामान्य मुंड़ाओं की अपेक्षा विशाल और आकर्षक था ।

बिरसा अब समाज-सेवा में रुचि लेने लगे । वे धर्म-सुधार की ओर भी ध्यान देने लगे । उन्होंने हिंदू धर्म तथा मुंड़ाओं के प्राचीन धर्म का सम्मिश्रण किया । मुंड़ा समाज उनकी ओर आकर्षित हुआ और समाज में उनका प्रभाव व आदर बढ़ता गया । मुंड़ा लोग यहाँ तक मानने लगे कि उन्हें कोई सिद्धि प्राप्त है और उनके हाथ फेरने से बीमार आदमी भी ठीक हो जाते हैं ।

उधर देशभर में आजादी की लहर फैलती जा रही थी । यद्यपि सन १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम, अंग्रेजों ने लाठी-गोली के जोर से दबा दिया था, किंतु आजादी की चिनगारी बुझी नहीं थी । यहाँ तक कि संथाल, कोल, खारिया आदि जनजातियों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना शुरू कर दिया । मुंड़ा भी जागरूक हो चुके थे । बिरसा के एक इशारे पर कितने ही मुंडा अपनी जान तक देने को तैयार थे ।

बिरसा के क्रांतिकारी विचारों से ब्रिटिश शासकों के होश उड़ गए । सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करना चाहा, लेकिन बिरसा अंग्रेज शासकों को चकमा देते रहे । अंत में ८ अगस्त सन १८९५ को अंग्रेजों ने उन्हें घर में सोते समय गिरफ़्तार कर लिया । जब सिपाही उन्हें हथकड़ी पहनाकर जेल ले जा रहे थे तो हजारों लोग उन्हें देखने को जमा हो गए । बिरसा और उनके साथियों पर लूटपाट करने का अभियोग लगाया गया और उन्हें दो वर्ष की सजा दी गई ।

जेल में बिरसा बहुत शांत रहते थे । वे ध्यान और मनन करते । जेल में भी बिरसा अपने समाज और आंदोलन की भावी योजनाएँ बनाते रहते । क्रांतिकारी बिरसा जेल से रिहा कर दिए गए । मुंडा समाज के लिए यह बेहद खुशी का दिन था । वे बिरसा के दर्शन के लिए उमड़ पड़े । उन्होंने जी भरकर नृत्य किया और खुशियाँ मनाईं।

बिरसा जेल से छूटने के बाद अधिक दिनों तक चुप न रह सके । वे फिर से देश और समाज की सेवा के लिए सक्रिय हो गए । बिरसा का यह संदेश हर मुंडा के घर तक पहुँचने लगा -

''हमें अपने खोये हुए अधिकार पाने हैं । हमें अपनी भूमि वापस लेनी है । हमें ब्रिटिश राज को समाप्त करना है ।''

बिरसा ने यह बात अपने लोगों पर छोड़ दी कि वे अहिंसा का मार्ग अपनाएँ या हिंसा का । वे स्वयं अहिंसा के पक्ष में थे । अंग्रेजों ने फिर भी उन्हें अपराधी घोषित कर दिया, इसलिए बिरसा भूमिगत हो गए । वे छिपकर ही गुप्त बैठकें करते और क्रांतिकारियों का मार्गदर्शन करते ।

हिंसा बढ़ती जा रही थी । बिरसा और उनके लोगों पर अंग्रेजों के जवाबी हमले होने लगे । बिरसा दोबारा पकड़े गए और उन्हें फिर से जेल में डाल दिया गया । बिरसा की गिरफ्तारी का उनके अनुयायियों ने कोई विरोध नहीं किया बल्कि वे स्वयं भी बिरसा के साथ जेल जाने को तैयार हो गए । उन लोगों का विश्वास था कि बिरसा में

दैवी-शक्ति है और वे दो-चार दिनों में जेल से बाहर आ जाएँगे । परंतु ऐसा न हुआ । जेल में बिरसा का स्वास्थ्य खराब रहने लगा । इलाज कराया गया किंतु उनका स्वास्थ्य नहीं सुधरा । अंत में बिरसा इस संसार से विदा हो गए । अंग्रेज शासकों ने इस महान क्रांतिकारी की लाश तक उनके साथियों को न दी ।

बिरसा नहीं रहे, किंतु वे आज भी जीवित हैं । लोककथाओं और लोकगीतों में झारखंड़ प्रदेश में आदिवासी उन्हें 'बिरसा भगवान' मानकर पूजते हैं ।

विचारबोध :- *प्रस्तुत पाठ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेनेवाले स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन से संबंधित है । इस पाठ में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े एक जनजाति नेता बिरसा मुंडा के अदम्य साहस के क्रियाकलापों का वर्णन किया गया है ।*

- शब्दार्थ -

अभियोग - आरोप । चकमा - धोखा । जागरूक - सचेत । डील-डौल - शरीर की बनावट । भावी - आगे होने वाली । भूमिगत - छिप जाना । यातनाएँ - तकलीफ़ें । सम्मिश्रण - मिला-जुला रूप । स्वाधीन - आज़ाद । लोकगीत - स्थानीय गीत । तेज तर्रार - होशियार, फुरतीला ।

प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) मुंडा जनजाति के विषय में आप क्या जानते हैं, बताइए ।

(ii) बिरसा ने धर्मसुधार के लिए क्या-क्या कार्य किए ।

(iii) अंग्रेजों ने बिरसा को क्यों गिरफ्तार किया ?

(iv) बिरसा के दोबारा गिरफ्तार होने पर उनके लोगों ने विरोध क्यों नहीं किया ?

2. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) बिरसा मुंडा कौन थे ? उनका जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

(ii) अंग्रेजों ने बिरसा को कैसे गिरफ्तार किया ?

(iii) मुंडा जनजाति किन-किन राज्यों में बसे हुए हैं ?

(iv) बिरसा मुंडा का बचपन किस प्रकार बीता ?

(v) जेल में बिरसा अपना समय कैसे बिताते थे ?

(vi) मुंडा जनजाति कैसे घरों में रहते हैं ?

3. **अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -**

(i) बिरसा मुंडा कौन थे ?

(ii) मुंडा जनजाति किस बात के शौकीन होते हैं ?

(iii) बिरसा के दादा का नाम क्या था और पिता का नाम क्या था ?

(iv) बिरसा का स्वभाव कैसा था ?

(v) बिरसा मुंडा जेल से कब रिहा हुए ?

(vi) नीचे दी गई तिथियों का बिरसा के जीवन से क्या संबंध है -

सन् 1875, सन् 1895, सन् 1897

(vii) मुंडा जन-जाति कौन-सी भाषा का प्रयोग करते थे ?

(viii) बिरसा ने कौन-कौन से धर्मों का सम्मिश्रण किया ?

(ix) 'भूमिगत' होने का क्या अर्थ है ?

4. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए –**

(i) जेल में बिरसा बहुत शांत रहते थे । वे ध्यान और मनन करते । जेल में भी बिरसा अपने समाज और आंदोलन की भावी योजनाएँ बनाते रहते ।

(ii) बिरसा नहीं रहे, किंतु वे आज भी जीवित हैं । लोककथाओं और लोकगीतों में झारखंड़ प्रदेश में आदिवासी उन्हें 'बिरसा भगवान' मानकर पूजते हैं ।

भाषा ज्ञान

5. प्रत्येक भाषा में अनेक ऐसे शब्द होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, वे शब्द प्रसंग बदलने पर अलग-अलग अर्थ देते हैं । पाठ में आए निम्नलिखित शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं । स्पष्ट कीजिए -

जन, नेता, जवान, नायक, पक्ष, धर्म ।

6. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए -**

स्वाधीन, काला, छोटा, मेहनती, विशाल, आकर्षक, प्राचीन, अनादर, खुशी, सक्रिय, विरोध, खराब, जीवित, अहिंसा, गुप्त ।

7. **दो पदों, वाक्याशों अथवा वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं जैसे -**

और, किन्तु, परन्तु, या आदि ।
'वे ध्यान और मनन करते ।'
पाठ में आए इस प्रकार के पाँच वाक्य छाँट कर लिखिए ।

8. **निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया को रेखांकित करते हुए उसके प्रकार (सकर्मक या अकर्मक) का उल्लेख कीजिए -**

(i) देश भर में आजादी की लहर फैलती जा रही थी ।

(ii) अंग्रेजों के जवाबी हमले हो रहे थे ।

(iii) वे छिपकर गुप्त बैठकें कर रहे थे ।

(iv) बिरसा आन्दोलन की भावी योजनाएँ बना रहे थे ।

(v) अंग्रेजों ने उन्हें अपराधी घोषित कर दिया ।

9. **शिक्षक से :**

(i) छात्रों को ओड़िशा के विभिन्न जिलों में बसने वाली विभिन्न जन-जातियों के बारें में सामान्य जानकारी दीजिए ।

(ii) जेल क्या होता है ? बच्चों को बताइए एवं उन्हें मांडले जेल के बारे में जानकारी दीजिए ।

10. **निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए -**

यातना, समूह, शौकीन, सेनानी, अनुयायी ।

11. **शून्यस्थान भरिए -**

(i) बिरसा का बचपन अन्य ..... बालकों की भांति बीता । (साधारण, असाधारण)

(ii) जेल में बिरसा बहुत ..... रहते थे । (शांत, अशांत)

(iii) मुंडा समाज एक ..... समाज है । (पितृ-प्रधान, मातृ-प्रधान)

(iv) झारखण्ड आदिवासी उन्हें ..... मानकर पूजते हैं । (बिरसा भगवान, बड़ा भगवान)

(v) मुंडा एक ..... है । (जनजाति, हरिजन)

●